ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(1): 275-277
www.allresearchjournal.com
Received: 02-11-2023
Accepted: 04-12-2023

डॉ० स्वपना किरण
हिंदी शिक्षिक +2 एम. एल. एकेडमी, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० स्वपना किरण
हिंदी शिक्षिक +2 एम. एल. एकेडमी, दरभंगा, बिहार, भारत

प्रगतिवादी कवि नागार्जुन की प्रतिद्धता; जनमानस के लिए

डॉ० स्वपना किरण

प्रस्तावना

नागार्जुन बीसवीं शताब्दी के विलक्षण कवि है वे गुजरे जमाने के कबीर थें। उनकी साहित्यिक रचनाओं को जनमानस मे अक्सर उदारतापूर्वक स्वीकार और पसंद किया जाता रहा है। प्रगतीवाद हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा में मील का पत्थर है। लीक से हटकर कवियों ने कविता को सामाजिक सन्दर्भों से जोड़ने का प्रयास किया। जातीय विषमताओं से मुक्ति के स्वर प्रगतीवादी कविता की देन है। नागार्जुन इसी काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिन्दी कविता कल्पनाओं को छोड़कर यथार्थ के ठोस वास्तविकताओं को सामने ला रही थी– प्रगतीवाद का परचम लहरा रहा था। नागार्जुन की कवि व्यक्तित्व उसी दौर में अपना फलक बढ़ा रहा था। उनकी कविता दीन दुखियो की समस्या का प्रतिनिधित्व करती है। "हिन्दी साहित्य की जीवन्त परम्परा और भारतीय जनता के सहासी अभियान का आदर्श स्थापित करती हैं।"[1]

वस्तुतः प्रगतीवाद शब्द से अभिप्राय उस साहित्यिक विधा से है जिसमें इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्ग चेतना की विचारधारा, प्रतिवद्धता, परिवर्तन के लिए सजगता और मानवीय द्वाष्टकोण अंतरनिहित है। प्रगतीवाद सीधी सहज, व्यंगपूर्ण, आक्रमकता के साथ काव्य शैली का वाचक है। प्रगतीवाद का विरोध करने वाले इसे मार्क्सवाद का रूपान्तर भी माना है। परन्तु नागार्जुन केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादूर सिंह, मुक्तिबोध जैसे यथार्थवादी कवियों नें अपनी प्रतिभा अनुसार प्रगतिवाद का एक समर्थ काव्य प्रवृत्ति के रूप मे विकास किया। आज प्रगतिशीलता के व्यापक अर्थ मे ऐतिहासिक चेतना, जीवनभुवों के विस्तार यथार्थ के मूल रूपो की समझ, जीवनधर्मी सौन्दर्यबोध आदि का उल्लेख किया जाता है। यथार्थवादी दृष्टिकोणों को प्रमुखता के साथ स्थान प्राप्त है।"

नागार्जून जनवादी होने के साथ-साथ अपने समय के विसंगतियों को यथार्थ के धरातल के निकष पर लाते हैं। इनके लेखन में सदैव भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, दरिद्रता अकाल तथा अभावभरी जिन्दगी की सत्यता इनकी कविताओं में स्पष्टता के साथ महसूस किया जा सकता है। 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता को देखा जा सकता है। "कई दिनों तक चुल्हा रोया, चक्की रही उदास। कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उनके पास, कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त। कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त"[2]

नागार्जुन की कविता में भूख, अकाल, पेट, का क्षोभ अनेक बार व्यक्त हुआ है, उनका प्रयास है कि प्रथमतः जन-जन वर्ग चेतन तो बनें। जिस देश में सौ में से सिर्फ दस काम में लगे हों और नब्बे बेकार हों वहाँ पेट और प्लेट तो खाली होंगे ही। आश्चर्य तो यह है कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ बेकार लोग काम-काजियों से अधिक व्यस्त होते हैं, नागार्जुन कहते हैं–

"खाली नहीं ट्राम, खाली नहीं ट्रेन, खाली नहीं माइंड, खाली नहीं ब्रेन, खाली है हाथ, खाली है पेट, खाली है थाली, खाली है प्लेट।"[3]

1975 में जब समस्त देश में आपातकाल की घोषणा हुई, तब कवियों, कलाकारों, बुद्धिजीवियों, समाज के विचारकों और चिन्तकों ने अपना पक्ष तय कर लिया। कुछ रचनाकार कलावादी लेखन के लिए प्रतिबद्ध हुए तो कुछ ने निम्नवर्ग की समस्याओं, 'प्रतिबद्ध हूँ' नामक कविता में नागार्जुन ने समाज के शोषित, उत्पीड़ित वर्ग के साथ स्वयं को पंक्तिबद्ध किया है–

"प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त।"[4]

नागार्जुन ने बहुत बड़ी संख्या में मेहनतकश लोगों की तबाह जिन्दगी और अनेक राजनीतिक संघर्षों पर कविताएँ लिखी हैं। जहाँ कहीं भी जनता शोषण, हिंसा का प्रतिकार करती है या संघर्ष करती है, वे पूरे मन से उसे समर्थन देते हैं, चाहे वह तेलंगाना विद्रोह हो, नक्सलवादी आन्दोलन हो या इमरजेंसी से मुक्त होने के लिए जनता का संघर्ष और छटपटाहट हो।

नागार्जुन की अनेक राजनीतिक कविताएँ किसी विशेष चिंतन पर आधारित नहीं है अपितु तीव्र 'कामनसेंस' पर आधारित है। किन्तु ऐसा नहीं है कि वे किसी विचारधारा पर विश्वास नहीं करते हैं। बहुत ही मोटे शब्दों में कहें तो उन्हें मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित प्रगतिशील कवि कहा जा सकता है।

मानव मुक्ति के लिए मानसिक दासता से मुक्ति जरूरी है। वैचारिक संघर्ष भी वर्ग संघर्ष का ही हिस्सा है। इस संघर्ष के लिए नागार्जुन प्राचीन पौराणिक कथाओं, सन्दर्भों एवं चरित्रों को अपनी कविता में उतारते हैं। ये पौराणिक सन्दर्भ मिथक कथाएँ भारतीय जनमानस के संस्कार में रची बसी हैं। जनभाषा में लोक प्रचलित कला रूपों का यह उन्मेष भारतीय नवजागरण की शक्ति का बोध कराता है। सामन्तवाद-साम्राज्यवाद विरोधी हिन्दी साहित्य की धारा की यह रूपगत परम्परा है।

नागार्जुन की आशाओं का केंद्र जनता है, जनता में इतने गहरे विश्वास के कारण ही नागार्जुन सर्वहारा का, शोषण में पिसती हुई जनता की मुक्ति का स्वप्न देखते हैं। जनता की अदम्य शक्ति में उनका पूरा विश्वास है। नागार्जुन की कविता 'शासन की बंदूक' सीधे सत्ता में संवाद करती है। इसमें जनता के अदम्य साहस की अभिव्यक्ति हुई है–

"खड़ी हो गयी चाँपकर कंकालों की हूक, नभ में विपुल विराट सी शासन की बन्दूक।
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक, जिसमें कानी हो गयी शासन की बन्दूक।
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक, बाल न बाँका कर सकी शासन की बन्दूक।"[6]

प्रगतिशील कवि जीवन की स्वीकृत के कवि होते हैं। जीवन धर्मी लगाव उनके यहाँ रेखांकित करने की चीज है। यह सकारात्मक दृष्टिकोण प्रगतिवाद की महत्वपूर्ण विशेषता है। प्रगतिवादी कवि कठिन अंधकार और भयानक निराशा में भी एक प्रकार के सकारात्मक दृष्टिकोण को जीवित रखता है। मानवीय सम्बन्धों में समानता के पक्षधर कवि नागार्जुन इसीलिए 'हरिजन गाथा' कविता में नवजातक को गौरव प्रदान करते हैं।[7]

कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तरों पर नागार्जुन जन प्रतिबद्धता से युक्त होकर प्रस्तुत हुए है। प्रगतिवाद के संबंध में यह धारणा बहुत प्रचलित है कि इस धारा के कवि वस्तु या कथ्य को ही महत्व देते है, रूप या शिल्प को नहीं। प्रगतिवादी कवियों का बल उस रूप या शिल्प पर है जो कथ्य या विषय वस्तु के संम्प्रेषण के लिए धारदार साबित हो। नागार्जुन ने यहाँ रूप की जो आश्यर्चजनक विविधता है वह किसी से छिपी नहीं है। वे दोहा भी लिखेंगे तो पूरी शक्ति के साथ। गीत जैसे रूपाकार के भीतर भी उन्होंने दुर्लभ- संगठन का प्रमाण दिया है। अतः उनकी काव्यभाषा में भी अलंकार, बिम्ब, प्रतीक मिल जाएंगे पर अलंकरण बनकर नहीं- भाषा की सादगी, सरलता, क्षमता और जीवनी शक्ति का प्रमाण बनकर। स्पष्टता, सहजता, प्रखरता, व्यंग्यविदग्धता, उग्रता, साहस और मूर्तता- ये सभी प्रगतिवादी काव्यभाषा के गुण हैं। कहना न होगा कि नागार्जुन की कविता में ये सभी भाषाई और शिल्पगत विशेषताएँ प्रचूर मात्रा में विद्यमान हैं। भाषण, भाव आदि दृष्टियों से नागार्जुन

की कविता भावुकता से मुक्त एक ऐसे तनाव बिन्दु पर केन्द्रित कविता है, जो भावुकता और बौद्धिकता के बीच का संतुलन बिन्दु है।[8]

सन्दर्भ

1. नया पथ जनवरी–जून (संयुक्तांक) 2011 पृ० 305
2. मिश्र शोभाकान्त, (सं.) नागार्जुन रचनावली खण्ड- 1, पहला संस्करण- 2003, पृ. 226
3. मिश्र शोभाकान्त, नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ- 2, प्र.सं- 1985, पृ० 29
4. खिचड़ी विप्लव देखा हमने- नागार्जुन, द्वितीय संस्करण 1999, पृ० 60
5. मिश्र शोभाकान्त, (सं.) नागार्जुन रचनावली खण्ड-1, पहला संस्करण 2003, पृ० 450
6. मिश्र शोभाकान्त, (सं.) नागार्जुन रचनावली खण्ड-2, पहला संस्करण- 2003, पृ० 404–405
7. मिश्र शोभाकान्त, (सं.) नागार्जुन रचनावली खण्ड-2 पहला संस्करण-2003 पृ० 72
8. नागार्जुनः नई कविता की ऐसी-तैसी प्रो० गोपेश्वर सिंह आलोचना, सहस्त्राब्दी अंक 44, जनवरी-मार्च 2012 पृ० 112